3

यहूदा से एक अनाम नबी

झूठ पर विश्वास करना

वचन पाठः 1 राजाओं 13

क्या आप को कभी किसी ने यह कहा है कि ''जो चाहे विश्वास करो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। केवल एक बात ध्यान रखें कि आप उसदिल से मानें। शिक्षा या डाक्ट्रिन का कोई महत्व नहीं है; जो आपका मन कहता है वही महत्वपूर्ण है''? आपने सुना होगा। हम सब ने सुना है। बाइबल हमारी मार्गदर्शक है, जिस कारण एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठाया जाना आवश्यक है कि क्या धर्म के सच होने के लिए यह ढंग है? आइए देखते हैं।

यारोबाम की कहानी छोड़ने से पहले आइए यहूदा के एक अनाम नबी पर और विस्तार से विचार करते हैं, जिसने उसकी नई बनी वेदी के सामने यारोबाम को डांटा था। हमारे लिए यह नबी विशेष दिलचस्पी का कारण है क्योंकि वह हमें सच्चाई और झूठ के बीच, आज्ञाकापालन और अवज्ञा के बीच संसार में लगे निरन्तर युद्ध का स्मरण कराता है।

आप ने ''छोटा सा झूठ'' अभिव्यक्ति सुनी होगी, परन्तु हमें याद रखना चाहिए कि झूठ कभी भी छोटा नहीं होता। कई झूठ छोटे *लग* सकते हैं पर वे छोटे होते नहीं हैं। बाइबल में एक व्यक्ति जो इस सच्चाई का गवाह है, वह यहूदा से आया नबी है। इस सच्चाई को जानने के लिए हमें यारोबाम को उसके डांटने के बाद की उसकी कहानी को देखना होगा।

यारोबाम की ऐतिहासिक डांट और सरेआम अपमान के बाद, परमेश्वर ने यारोबाम को मन फिराव का एक अवसर देना चुना। उसका हाथ और भुजा ठीक हो गए थे और अन्तिम न्याय ने एक छोटी उंगली सूखी रहने दी थी। चैन की सांस लेते हुए यारोबाम ने उस नबी को खुशी से अपने साथ भोजन करने और ईनाम देने का निमन्त्रण दिया। कितना अजीब निमन्त्रण है! कौन नबी होगा जो यह न कहना चाहेगा कि ''मैंने इस राजा को डांट लगाई और यह मुझे खाने के लिए अपने महल में ले जाकर मेरा धन्यवाद करता है''?

राजा से यह कह कर कि ''चाहे तू मुझे अपना आधा घर भी दे, तौभी तेरे घर न चलूंगा; और इस स्थान में मैं न तो रोटी खाऊंगा और न पानी पीऊंगा। क्योंकि यहोवा के वचन के द्वारा मुझे यों आज्ञा मिली है, कि न तो रोटी खाना, और न पानी पीना, और न उस मार्ग से लौटना जिस से तू जाएगा'' (1 राजाओं 13:8, 9) नबी ने दिखाया कि अपने असली मालिक के साथ उसकी वफादारी कैसी है। यदि इस नबी का जीवन कहानी में यहीं समाप्त हो जाता, तो हमने इसे बाइबल के महानतम नबियों में से एक मानना था। हम उसके लिए कहते कि ''यह व्यक्ति अब तक का सबसे महान व्यक्ति है। उसने अपना मन एक ही बात यानी परमेश्वर की सच्चाई पर लगाया था। राजा हो या रंक कोई भी उसे परमेश्वर की इच्छा से पलटने के लिए मना नहीं पाया। वह एक सच्चा नबी था, जो केवल परमेश्वर की सच्चाई बताने को समर्पित था और उसने बिना भय या

पक्षपात के उसे सुनाया।'' परन्तु इस आदमी की अगली कहानी हमें उसकी कुछ और ही तस्वीर दिखाती है।

यह सुनिश्चित करते हुए कि वह जिस रास्ते से आया था उसे उससे दूसरे रास्ते से वापस जाना है, यहूदा से आया नबी अपने गधे पर सवार होकर घर की ओर चल पड़ा। सारे बेतेल में इस बात की धूम मच गई होगी कि वेदी पर यारोबाम के साथ क्या हुआ था। कुछ जवानों ने, जिन्होंने उन घटनाओं को देखा था, घर जाकर अपने पिता को एक बूढ़े नबी और जो कुछ वहां हुआ था के बारे में बताया। हम उस बूढ़े नबी के बारे में उससे अधिक नहीं जानते कि वह अपने लड़कों से सुनकर भावुक हो गया था। उसने उनसे पूछा कि वह ''किस मार्ग से चला गया?'' (13:12)। लड़कों को मालूम था। वेदी के पास जो भी था, उसे मालूम था कि वह नबी यहूदा को वापस किस मार्ग से गया। नबी के राजा को उत्तर देने के बाद कोई संदेह नहीं कि वह मुड़ कर राजा के सामने से बाहर गया, अपने गधे पर सवार हुआ और एक राजनेता की तरह जो निर्णय लेने के कठिन समय में सच्चाई के लिए जीत गया था, नगर की ओर चल दिया। जिस-जिस ने इस दृश्य को देखा था वे सब अपनी आंखों से उसके एक-एक कदम को बड़े ध्यान से देखते रहे, जब तक वह अपने गधे पर सवार होकर आंखों से ओझल न हो गया। उसके वहां से अदृश्य हो जाने के बाद वे सुन्न से हुए कुछ मिनट के लिए पथरा कर खड़े रहे होंगे। उनके कानों में अभी भी न्याय की बात गूंज रही होगी। फिर एक-एक करके लाजवाब हुए और जो कुछ उन्होंने देखा था उस पर गम्भीरतापूर्वक विचार करते हुए वे अपने-अपने घरों को चल दिए। हां, लड़कों को पता था कि वे किस रास्ते गया था, क्योंकि उन्होंने उसे रौशनी के दूत के रूप में अपने ईश्वरीय प्रेषक के पास जाते देखा था।

बूढ़ा नबी, यह जानने के बाद कि यह जवान नबी नगर से किस रास्ते से निकला है फुर्ती से अपने गधे पर सवार होकर उसके पीछे गया। अभी बहुत दूर नहीं गया था कि उसने आराम करते एक पेड़ के नीचे परमेश्वर के जन को पाया। हम नहीं जानते कि बूढ़े नबी ने जो कुछ कहा या किया वह क्यों किया।[1] हम नहीं जानते कि जो उस जवान नबी ने किया वह क्यों किया। बूढ़े नबी ने उससे कहा, ''मेरे घर चलकर भोजन कर'' (13:15)। पहले तो जवान नबी ने निमन्त्रण को यूं ही ठुकराया और उसका विरोध किया, जैसे उसने यारोबाम के निमन्त्रण का किया था। उसने कहा:

> मैं न तो तेरे संग लौट सकता, और न तेरे संग घर में जा सकता हूं और न मैं इस स्थान में तेरे संग रोटी खाऊंगा, न पानी पीऊंगा। क्योंकि यहोवा के वचन के द्वारा मुझे यह आज्ञा मिली है, कि वहां न तो रोटी खाना और न पानी पीना, और जिस मार्ग से तू जाएगा उस से न लौटना (13:16, 17)।

बूढ़ा नबी जो किसी कारण शैतान की प्रेरणा पाया हुआ था, उससे कहने लगा:

> जैसा तू नबी है वैसा ही मैं भी नबी हूं; और मुझ से एक दूत ने यहोवा से वचन पाकर कहा, कि उस पुरुष को अपने संग अपने घर लौटा ले आ, कि वह रोटी खाए, और पानी पीए (13:18)।

इन निर्णायक शब्दों के बाद लिखा है कि ''यह उस ने उस से झूठ कहा'' (13:18)। इन शब्दों को धीरे-धीरे विचार करते हुए पढ़ें। यहां हमें उस जवान नबी की सच्चाई दिखाई देती है। क्या वह सचमुच परमेश्वर की आज्ञा मानने को समर्पित था या उसने अपने मन में कोई खाली जगह छोड़ रखी थी? उसने एक राजा को तो डांट दिया था पर एक बूढ़े नबी के झूठ से मूर्ख बन गया था? इन प्रश्नों का उत्तर आयत 19 में दिया गया है: ''अतएव वह उसके संग लौट गया और उसके घर में रोटी खाई और पानी पीया।'' अनकही कहानी को देखते हुए हमारे मन उसके लिए यह कहते हुए पुकार उठते हैं, ''नहीं! नहीं! बातों में मत आना। परमेश्वर के वचन की बात ही मानना।'' उसके पेड़ की छांव से नबी के घर को जाने को देखते हुए जो वफ़ादारी से बेवफाई का सफर, एक महान नबी होने से एक नबी ''था,'' जीवित नबी होने से मृत नबी होने का सफ़र देखकर हमारे मन चिन्तित हो जाते हैं।

नबी के घर में खाने के लिए बैठा होने पर, पवित्र आत्मा ने उस बूढ़े नबी को जवान नबी के भविष्य की भविष्यवाणी करने के लिए बाधित किया:

> यहोवा यों कहता है, ''इसलिए कि तू ने यहोवा का वचन न माना, और जो आज्ञा तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे दी थी उसे भी नहीं माना; परन्तु जिस स्थान के विषय में उस ने तुझ से कहा था, कि उस में न तो रोटी खाना और न पानी पीना, उसी में तू ने लौट कर रोटी खाई, और पानी भी पिया है, इस कारण तुझे अपने पुरखाओं के कब्रिस्तान में मिट्टी नहीं दी जाएगी'' (13:21, 22)।

बाद में उसी दिन जब वह जवान नबी घर लौट रहा था, उस पर एक शेर ने हमला कर उसे फाड़ डाला, जिससे वह मर गया। जब बूढ़े नबी ने उसके मरने की खबर सुनी तो वहां जा कर उसने उसका शव उठाया और नगर में ले आया, उसे अपनी कब्र में रखा और विलाप करने लगा, ''हाय, मेरे भाई! तूने यह क्या किया?'' वह अपने वापस आने के बीच में ही गिर गया। वह एक ऐसा प्रचारक था, जिसने अपने ही संदेश को नहीं माना। वह एक सच्चा व्यक्ति था, जो झूठ के द्वारा भरमाया गया था।

यह दु:खद कहानी हमारे मनों को झूठ पर विश्वास करने की त्रासदी में सचेत रहने के लिए सहायक होनी चाहिए। झूठ किसी का हमदर्द नहीं है। यह राजाओं और प्रचारकों को एक समान दोषी ठहराता है। रास्ते पर मरा पड़ा नबी हमें सिखाता है कि परमेश्वर सच्चाई का परमेश्वर है। झूठ और बेईमानी परमेश्वर के विरोधी हैं। स्वर्ग से केवल सच्चाई ही दी गई है और स्वर्ग की ओर से केवल सच्चाई का ही सम्मान किया जाता है। इस घटना की पृष्ठभूमि के विपरीत हम आसानी से देख सकते हैं कि यह झूठ इतना त्रासद क्यों था।

झूठ भ्रम पैदा करने वाला है

पहले तो झूठ एक त्रासदी है क्योंकि यह गुमराह करता और धोखा देता है। इस अर्थ में यह परमेश्वर के उलट है क्योंकि परमेश्वर कभी छल नहीं करता। उसका वचन सदैव भला है। उसमें असत्य कुछ भी नहीं है। वह हमें धार्मिकता के मार्गों पर ले चलता है (भजन संहिता 23:3)।

झूठ हमें उसमें अगुआई नहीं करता जो सही है बल्कि उसमें करता है जो असत्य और अवास्तविक है। बूढ़ा नबी चाहता था कि जवान नबी उसके इस झूठ को मान ले कि उसके घर खाना और पीना सही है, चाहे यह परमेश्वर की इच्छा को बिल्कुल न मानना था। जवान नबी ने उस पर विश्वास कर लिया और बुरी तरह से फंस गया।

ध्यान दें कि झूठ कई बार कैसे विश्वास योग्य हो सकता है। बूढ़े नबी ने अपने झूठ को यह दावा करते हुए बड़ा मोहक बना दिया कि वह भी एक *नबी* है और उसे *एक स्वर्गदूत* ने दिखाई देकर जवान नबी को दी गई आज्ञा की जगह नई आज्ञा दी है। उसने तर्क दिया कि उसे यह संदेश देने वाले पर विश्वास किया जा सकता है कि वह अर्थात संदेश देने वाला भी विश्वास के योग्य है। हम नहीं जानते कि यहूदा से आए नबी ने उसकी बात कैसे मान ली, पर हो सकता है कि उसने मन में सोचा हो, ''वह भी तो एक नबी है, और बता रहा है कि स्वर्गदूत ने उसे दर्शन दिया है। मुझे तो स्वर्गदूत ने दर्शन नहीं दिया था। यह ठीक ही कह रहा होगा। मुझे इसके साथ इसके घर जाना चाहिए।'' इस प्रकार उसने बूढ़े नबी के झूठ को जो विश्वसनीयता में लपेटा हुआ, और सजाया हुआ था, मानने के लिए परमेश्वर की स्पष्ट आज्ञा को नज़रअंदाज़ कर दिया।

किसी ने कहा है, ''जो आदमी कहता है कि आप को दिखाई देने के बाद प्रभु ने मुझे दर्शन दिया है, उस पर विश्वास करने के बारे में सावधान रहें!'' सच्चाई यह है कि प्रभु ने हम सबको अपना वचन अर्थात बाइबल दी है और जो कोई यह कहता है कि उसे बाइबल के बाद कोई नया प्रकाशन मिला है तो ध्यान दिया जाना चाहिए कि कहीं वह पागल तो नहीं। यदि वह हमसे वह बात मानने का आग्रह करता है जो वचन में स्पष्ट नहीं मिलती, तो उसकी नहीं, बाइबल की बात मानें! पौलुस की बात याद रखें:

> परन्तु यदि हम या स्वर्ग से कोई दूत भी उस सुसमाचार को छोड़ जो हम ने तुम को सुनाया है, कोई और सुसमाचार तुम्हें सुनाए, तो श्रापित हो। जैसा हम पहिले कह चुके हैं, वैसा ही मैं अब फिर कहता हूं, कि उस सुसमाचार को छोड़ जिसे तुम ने ग्रहण किया है, यदि कोई और सुसमाचार सुनाता है, तो श्रापित हो (गलातियों 1:8, 9)।

झूठ विनाशकारी है

झूठ के त्रासदी होने का एक और कारण यह है कि झूठ हमेशा विनाशकारी होता है। बूढ़ा नबी जवान नबी को अपने घर बुलाकर उसे अन्धकार, विनाश और मृत्यु में बुलावा दे रहा था। यदि आप किसी की आत्मा की हत्या करना चाहते हैं तो केवल उसे झूठ में विश्वास दिला दें कि वह उसमें जीवित रहे। जो कोई किसी दूसरे को परमेश्वर की आज्ञा तोड़ने के लिए अगुआई करता है वह उसका मित्र नहीं बल्कि शत्रु है, दिखने में वह चाहे कैसा भी हो यानी उसका व्यक्तित्व या आवाज़ कितनी भी सुरीली क्यों न हो।

किसी भी शिक्षा के लिए एक बात पूछी जानी आवश्यक है कि ''यह कहां ले जाएगी?'' झूठ का अन्तिम फल मृत्यु ही है। क्या आप जानना चाहते हैं कि बेईमानी क्या करती है? जवान नबी को रास्ते पर पड़ा देखें और अपने आप से कहें, ''यह व्यक्ति झूठ में विश्वास करने का परिणाम है।''

हर झूठ विनाशकारी है। झूठ में ऐसी कोई बात नहीं जो हानि रहित हो। झूठा व्यक्ति उस झूठ से प्रभावित होता है जो वह बताता है। बूढ़ा नबी अपमान के गड्ढे में गिर गया और उसने अपने मन से और होंठों से झूठ निकालकर परमेश्वर की स्वीकृति से अपने आप को निकाल दिया। उसका जीवन अपने गलत काम के लिए परमेश्वर के वचन में सदा के लिए लिखा गया। जो कोई भी झूठ पर विश्वास करता है वह झूठ से प्रभावित होता है। जीवन सच्चाई के साथ मिलकर रहने के लिए बनाया गया था। जो व्यक्ति झूठ से जीने की कोशिश करता है वह अन्धकार, नासमझी और बुरे परिणामों में काम करता है। बचाव का कोई रास्ता नहीं है। झूठ उसी को हानि पहुंचाता है जो इसे बोलता और जो इसे मानता है।

झूठ शैतानी है

यह कहने का कि झूठ एक त्रासदी है एक और कारण है कि झूठ शैतान की ओर से ही होता है। जब भी आप किसी झूठ को सुनते हैं आपको पता होता है कि वहां शैतान है। यीशु ने कहा कि शैतान झूठा है वरन झूठ का पिता है (यूहन्ना 8:44)। इस कारण हम पूरे विश्वास से कह सकते हैं कि इस कहानी में शैतान कहीं न कहीं है। जब वचन यह घोषणा करता है कि बूढ़े नबी ने झूठ बोला तो वह हमें यह बता रहा है कि बूढ़ा नबी शैतान के प्रभाव में था। जो भी झूठ बोलता है वह शैतान के प्रभाव में होता है। झूठ बोलने वाला व्यक्ति शैतान की सन्तान है।

हमें यह तो नहीं पता कि बूढ़े नबी ने जवान नबी से झूठ बोलने का निर्णय कब लिया; इतना जानते हैं कि उसने उससे झूठ बोलना क्यों चुना। हमें यह तो पता नहीं कि उसने उससे झूठ बोला, पर इतना अवश्य जानते हैं कि उस झूठ का परिणाम क्या था। इस दृश्य से हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि कारण जो भी हो, निर्णय जब भी और जहां भी लिया गया हो झूठ शैतान का काम है और यह संसार में शैतान के प्रभाव में आगे ले चलता है।

यीशु ने कहा कि सच्चाई हमें छुड़ाती है (यूहन्ना 8:32)। केवल उन सभी ढंगों पर विचार करें जिनसे सच्चाई हमें आज़ाद करती है यानी यह हमें पाप की दासता से (रोमियों 6:17, 18, 21, 22), अन्धकार और अज्ञानता से (यूहन्ना 17:17; रोमियों 1:25; 1 थिस्सलुनीकियों 5:3, 4), मृत्यु से (रोमियों 8:2; इब्रानियों 2:14), बेईमानी से (इफिसियों 4:23-25), न्याय के भय से (यूहन्ना 3:18, 19, 21) और परमेश्वर की नाराजगी से (2 थिस्सलुनीकियों 1:10, 11; 2:9, 10) छुड़ाती है।

यहूदा से आए नबी से जो सबक हमने सीखा है वह कभी भुलाया नहीं जाना चाहिए। यह जीवन की बुनियादी पसन्द के विषय में है। जब सब कुछ कहा और किया जाए, तो जीवन का बुनियादी निर्णय लेना होता है कि मैं परमेश्वर की मानूंगा या शैतान की ? यदि मेरा निर्णय परमेश्वर के पीछे चलने का है तो मैं इसके साथ ही सच्चाई को मानता हुआ अपने आप को समर्पित करूंगा क्योंकि परमेश्वर ज्योति है और उसमें अन्धकार बिल्कुल नहीं (1 यूहन्ना 1:5)। यदि मेरा निर्णय शैतान की मानना है तो सच्चाई से कोई फर्क नहीं पड़ता, परन्तु इसके परिणाम दु:खद, विनाशकारी और अनन्तकालिक हैं (मत्ती 25:41-46)।

सारांश

यहूदा के इस नबी की कहानी यहां यारोबाम को डांट लगाने और उसके झूठ पर विश्वास करने के प्रलोभन में पड़ने वाले हर व्यक्ति और सच्चाई से फिर जाने वाले हर व्यक्ति के लिए है। उस नबी पर तेज़ी से और कठोर परिणाम आए क्योंकि उसने सच्चाई पर अपनी पकड़ ढीली कर ली थी। वह परमेश्वर का प्रतिनिधि था और परमेश्वर की सच्चाई का किसी बात से समझौता नहीं होना था। उसे इसका प्रचार करना और इसे मानना आवश्यक था। परमेश्वर ने हमें यह सच्चाई सिखाने के लिए उस नबी के प्राण का अन्त करके बहुत बड़ा नाप लिया। क्या हम इससे सबक लेंगे ?

सीखने के लिए सबक:
झूठ जान ले लेता है; सच्चाई जीवन देती है।

टिप्पणी

[1]कई सम्भावनाएं सुझाई गई हैं कि बड़े नबी ने यहूदा से आए नबी से यह पेशकश क्यों की थी। पहली सम्भावना तो यह मानी जाती है कि बूढ़ा नबी, जवान नबी के साहस और ईमानदारी से इतना प्रभावित हुआ था कि वह उससे मिलने को इतना उत्सुक था कि परमेश्वर की इच्छा का विरोध होने के बावजूद जोश में उसने उसे अपने घर आने के लिए कहा। आरम्भ में बूढ़े नबी ने सच्चाई का सम्मान वैसे नहीं किया जैसे उसे करना चाहिए था, वरना वह यारोबाम के साथ जो कुछ हो रहा था उसे यूं ही देखता रहता। इस कारण यह कहानी बनाते हुए कि परमेश्वर ने उससे कैसे बात की है वह जवान नबी के साथ एक सीमा तक जा रहा था।

एक और सम्भावना है कि बूढ़ा नबी जान बूझकर यहूदा से आए नबी को अपने स्तर तक नीचे लाना चाह रहा था। वेदी पर की गई घोषणा में बूढ़े नबी समेत जो इसके विरुद्ध बोलने में असमर्थ रहा था, यारोबाम के साथ बेदीनी में जाने या विश्वास त्याग करने वाले सब लोगों को दोषी ठहराया गया था। इसलिए यदि बूढ़ा नबी जवान नबी को एक झूठ में फंसा लेता तो एक सीमा तक उसने यारोबाम और बेतेल को दी गई उसकी डांट को प्रभावित करना था। बूढ़े नबी को यारोबाम के पापों को डांटना चाहिए था और उसे जवान नबी द्वारा दोषी ठहराया गया, जिसने उसे डांटा था। इस प्रकार विकृत रूप में जवान नबी को गलत ढंग से फंसा लेना बूढ़े नबी के विवेक को सुकून देने वाला था।

तीसरी सम्भावना, कइयों को मानना है कि बूढ़ा नबी यह देखने के लिए कि जवान नबी था या नहीं, उसकी परीक्षा ले रहा था। जवान नबी यरूशलेम से आया था। क्या वह दक्षिणी राज्य से आया दूत था, जो परेशानी पैदा करने के लिए आया था, या वह सचमुच उन्हें उनके पाप के लिए दोषी ठहराने परमेश्वर की ओर से भेजा गया असली नबी है। यदि जवान नबी इस गलत निर्णय को मान लेता तो उसने यह साबित करना था कि वह परमेश्वर का ''असली'' नबी नहीं है।

चौथी सम्भावना, हो सकता है कि बूढ़ा नबी केवल राजा की ओर से दिखावा कर रहा हो। वह अपने आप बना राजा का वकील था। यारोबाम यहूदा से आए नबी को अपने घर बुला नहीं पाया था, सो बूढ़े नबी ने वह करने की कोशिश की जो नहीं कर पाया। यदि बूढ़ा नबी उसे अपने घर बुला लेता, तो उसने भविष्यवाणी के असर को कम कर देना था और शायद उत्तरी राज्य में अपने लिए प्रसिद्धि पा लेनी थी। सफल होने का यह एक अवसर हो सकता था।

सुझाव चाहे कितने भी दिए गए हैं, परन्तु यह केवल अनुमान ही होगा कि बूढ़े नबी को प्रेरणा कैसे मिली। हम जानते हैं कि उसने उससे ''झूठ बोला।'' यह मानना पड़ेगा कि यही सच्चाई पवित्र आत्मा हमें दिखाना चाहता था।